3. शब्द-रचना

भाषा तीन चरणों में चलती है - पहला वर्ण, दूसरा शब्द और तीसरा वाक्य। इन तीनों के क्रमबद्ध, व्यवस्थित तथा सार्थक समूह से भाषा पूर्ण होती है। बच्चे जानते हैं कि वर्णों का क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है। अब बच्चे जानेंगे कि वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं पर वर्णों का यह मेल सार्थक होना चाहिए।

शिक्षण-संकेत

- शिक्षक/शिक्षिका शब्द के बारे में समझाते हुए बताएँ कि जिस शब्द को सुनकर हमारे मन में कोई चित्र या आकृति उभरती है अथवा उसका कोई अर्थ निकले, वह सार्थक शब्द होता है।
- अब इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए पाठ पृष्ठ 16 पर दिए चित्र के वाक्यों को पढ़ें और फिर इसके सभी शब्दों के वर्णों को अलग-अलग करके बताएँ।
- समझाएँ, वर्णों का सही क्रम होने पर ही एक सार्थक शब्द की रचना होती है। यदि किताब या फूल शब्दों के वर्णों को ताबकि या लफू क्रम में लिखेंगे तो इससे किसी शब्द की रचना नहीं होगी। वर्णों का सही क्रम में जुड़ना आवश्यक है।
- उन्हें शब्द की परिभाषा याद करवाएँ।
- बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए उनसे जुड़े कुछ प्रश्न पूछें, जैसे - ऐसा कौन-सा एक शब्द है जो आप अपने दैनिक जीवन में रोज़ाना बोलते हैं। क्या वह शब्द है अथवा नहीं आदि प्रश्नों द्वारा बच्चों का रुझान बनाए रखें।
- शब्दों के प्रकार के बारे में बच्चों को बताएँ। समझाएँ, हिंदी भाषा में अनगिनत शब्द हैं। उत्पत्ति के आधार पर चार प्रकार के शब्द होते हैं– तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी। अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के हैं – सार्थक शब्द और निरर्थक शब्द। प्रयोग के आधार पर शब्द होते हैं– विकारी तथा अविकारी।
- बच्चों को इस सभी शब्दों के बारे में विस्तार से समझाएँ; जैसे– तत्सम, तद्भव शब्दों के बारे में बताएँ कि जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयोग होते हैं, वे तत्सम होते हैं तथा जो शब्द संस्कृत से हिंदी में अपना रूप परिवर्तित करके प्रयोग किए जाते हैं, वे तद्भव होते हैं। जैसे– अग्नि-आग, दुग्ध–दूध आदि। इसी प्रकार सार्थक और निरर्थक शब्दों से परिचित करवाते हुए बताएँ, सार्थक शब्दों का अर्थ होता है तथा निरर्थक शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता। जैसे हम बोलते हैं - चाय-वाय, पानी-वानी, चीनी-वीनी आदि। इन शब्दों में चाय, पानी और चीनी सार्थक शब्द हैं पर वाय, वानी और वीनी निरर्थक।
- सुनिश्चित कर लें कि बच्चे सब समझ गए हैं, तदुपरांत पाठ अभ्यास करवाएँ।